UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 27 गरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

रवीन्द्रनाथ का जन्म 7 मई, 1861 ई० को कोलकाता में हुआ। इनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थीं। बचपन से ही इन्हें प्रकृति से बहुत प्रेम था। सन् 1868 ई० में इन्हें स्कूल भेजा गया। इनका स्कूल में मन नहीं लगता था। कुश्ती, चित्रकारी, व्यायाम, संगीत और विज्ञान में इनकी विशेष रुचि थी। सत्रह वर्ष की अवस्था में उच्च शिक्षा के लिए ये इंग्लैंड गए। ये लेखन
और चित्रकारिता में निपुण होकर भारत लौटे। सन् 1883 ई० में इनका विवाह मृणालिनी से हुआ। पिता ने इन्हें जमींदारी सँभालने के लिए कहा। रवीन्द्र ने गरीब और अन्धविश्वास से पूर्ण किसानों के लिए स्कूल खोलने का निश्चय किया। पूछे जाने पर मृणालिनी ने सहमति व्यक्त की। शान्ति निकेतन विद्यालय खुल गया, जहाँ कक्षाएँ खुले वातावरण में पेड़ों के नीचे लगती थीं। शान्ति निकेतन आगे चलकर विश्वभारती विश्वविद्यालय बन गया, जो बाद में देश को समर्पित हुआ। टैगोर ने गाँवों की उन्नति के लिए खेतीबाड़ी
और पशुपालन के उन्नत तरीके अपनाए।
टैगोर की प्रतिभा बहुमुखी थी। इनकी कहानियों, कविताओं, उपन्यासों, नाटकों, गीतों व चित्रों में, इनके चिन्तन और विचारों की अभिव्यक्ति होती है। हमारा राष्ट्रगान 'जन-गण-मन अधिनायक जय हे' इन्हीं का लिखा हुआ है। गांधी जी ने रवीन्द्र को 'गुरुदेव' की उपाधि दी। 'गीतांजलि' के लिए सन् 1913 ई० में इन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला। सन् 1914 ई० में इन्हें 'सर' की उपाधि मिली, जो इन्होंने जलियाँवाला बाग हत्याकांड के विरोध में वापस लौटा दी। 7 अगस्त, सन् 1941 ई० को इनके समृद्ध और उत्कृष्ट जीवन का अन्त हो गया।

https://www.evidyarthi.in/